# एक कुत्ता और एक मैना

लेखक परिचय :

## हजारी प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी के शीर्ष निबंधकार, उपन्यासकार, आलोचक, चिन्तक हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त, सन् 1907 में बलिया (उत्तरप्रदेश) जिले के आरत दुबे का छपरा ग्राम में हुआ था। पिता की प्रेरणा से संस्कृत और ज्योतिष के अध्ययन की ओर प्रेरित हुए। सन् 1940 से 1950 तक शान्ति निकेतन के हिन्दी भवन में निदेशक के पद पर कार्य करते रहे। यहाँ पर कविवर रवीन्द्रनाथ टैगौर और आचार्य क्षितिमोहन सेन के संपर्क में आए और साहित्य साधना में उन्मुख हुए। लखनऊ विश्वविद्यालय ने आपको डी.लिट. की उपाधि से सम्मानित किया। इन्होंने शांति निकेतन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं पंजाब विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य किया। अशोक के फूल, कुट्ज, कल्पलता, बाण भट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कबीर उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। साहित्य का इतिहास, आलोचना, शोध और उपन्यास के क्षेत्र में द्विवेदी जी का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं पद्मभूषण अलंकरण से सम्मानित किया गया।

द्विवेदी जी ने अपनी रचनाओं के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा के तीन रूप हैं : तत्सम प्रधान, सरल तद्भव प्रधान तथा उर्दू अँग्रेजी शब्द युक्त व्यावहारिक रूपों का भी विषयानुसार प्रयोग हुआ है। द्विवेदी जी की भाषा सुव्यवस्थित, प्रांजल, सुबोध एवं प्रवाहमय है। शब्द चयन उत्तम और वाक्य विन्यास सुगठित है। भाषा को गतिशील एवं प्रवाहपूर्ण बनाने के लिए आपने लोकोक्तियों और मुहावरों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया है। संस्कृत भाषा की प्रचुरता एवं कहीं-कहीं लम्बे वाक्यों के कारण आपकी भाषा में क्लिष्टता भी आ गई है। आपकी भाषा आलंकारिकता, चित्रोपमता और सजीवता के गुणों से परिपूर्ण है। अनेक स्थलों पर आपके वाक्यों ने सूक्तियों का रूप धारण कर लिया है। द्विवेदी जी ने विविध विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। इन विविध विषयों में अनेक शैलियों का प्रयोग किया गया है।

***प्रस्तुत रचना द्विवेदीजी की संस्मरण शैली की परिचायक है। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर, उनका कुत्ता तथा शान्ति निकेतन की मैना इन तीनों से सम्बन्धित स्मृतियों को आचार्य द्विवेदी जी ने इस संस्मरण में स्थान दिया है। वे उस कवि-दृष्टि को इस संस्मरण में रेखांकित करते हैं जो मनुष्य, पशु तथा पक्षियों को अभेद-भाव से देखती है। लंगड़ी मैना के अन्तर्मन में छिपी करुणा और कुत्ते का आत्मीय भाव गुरुदेव को प्रभावित करते हैं। यह संस्मरण सम्पूर्ण प्राणिलोक में विस्तारित एक ही भाव संवेदना को व्यक्त करता है।***

---

आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव के मन में आया कि शांतिनिकेतन को छोड़कर कहीं अन्यत्र जाएँ। स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था। शायद इसलिए या पता नहीं क्यों, यह पाया कि वे श्रीनिकेतन के पुराने तिमंजिले मकान में कुछ दिन रहें। शायद मौज में आकर ही उन्होंने यह निर्णय किया हो। वे सबसे ऊपर के तल्ले में रहने लगे। उन दिनों ऊपर तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियाँ थीं, और वृद्ध और क्षीणवपु रवीन्द्रनाथ के लिए उस पर चढ़ सकना असंभव था। फिर भी बड़ी कठिनाई से उन्हें वहाँ ले जाया जा सका।

उन दिनों छुट्टियाँ थीं। आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गये थे। एक दिन हमने सपरिवार दर्शन को ठानी। दर्शन को मैं जो यहाँ विशेष रूप से दर्शनीय बनाकर लिख रहा हूँ। उसका कारण यह है कि गुरुदेव के पास जब कभी मैं जाता था तो प्रायः वे यह कहकर मुस्करा देते थे कि 'दर्शनार्थी हैं क्या?' शुरू-शुरू में मैं उनसे ऐसी बाँग्ला में बात करता था, जो वस्तुतः हिंदी मुहावरों का अनुवाद हुआ करती थी। किसी बाहर के अतिथि को जब मैं उनके पास ले जाता था तो कहा करता था, 'एक भद्र लोक आपनार दर्शेर जन्य ऐसे छेन।' यह बात हिंदी में जितनी प्रचलित है, उतनी बाँग्ला में नहीं। इसलिए गुरुदेव जरा मुस्करा देते थे।

बाद में मुझे मालूम हुआ था कि मेरी यह भाषा बहुत अधिक पुस्तकीय है और गुरुदेव ने उस 'दर्शन' शब्द को पकड़ लिया था। इसलिए जब कभी मैं असमय में पहुँच जाता था तो वे हँसकर पूछते थे 'दर्शनार्थी लेकर आये हो क्या ?' यहाँ यह दुख के साथ कह देना चाहता हूँ कि अपने देश के दर्शनार्थियों में कितने ही इतने प्रगल्भ होते थे कि समय - असमय, स्थान - अस्थान, अवस्था-अनवस्था की एकदम परवाह नहीं करते थे और रोकते रहने पर भी आ जाते थे। ऐसे 'दर्शनार्थियों' से गुरुदेव कुछ भीत-भीत से रहते थे। अस्तु मैं मय बाल-बच्चों के एक दिन श्रीनिकेतन जा पहुँचा । कई दिनों से उन्हें देखा नहीं था।

गुरुदेव वहाँ बड़े आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़-भाड़ उतनी नहीं होती थी, जितनी शांतिनिकेतन में । जब हम लोग ऊपर गए तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यान स्मित नयनों से देख रहे थे। हम लोगों को देखकर मुस्कराए, बच्चों से जरा छेड़-छाड़ की, कुशल प्रश्न पूछे और फिर चुप हो रहे। ठीक उसी समय उनका कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और उनके पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा । वह आँखें मूँदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह रस का अनुभव करने लगा । गुरुदेव ने हम लोगों की ओर देखकर कहा, "देखा तुमने यह आ गए। कैसे इन्हें मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ आश्चर्य है। और देखो, कितनी परितृप्ति इनके चहरे पर दिखाई दे रही है।"

हम लोग उस कुत्ते को आनन्द से देखने लगे। किसी ने उसे राह नहीं दिखाई थी, न उसे यह बताया था कि उसके स्नेह दाता यहाँ से दो मील दूर हैं और फिर भी वह पहुँच गया। इसी कुत्ते को लक्ष्य करके उन्होंने 'आरोग्य' में इस भाव की एक कविता लिखी थी - प्रतिदिन प्रात:काल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर आसन के पास तब तक बैठा रहता है जब तक अपने हाथों के स्पर्श से मैं इसका संग नहीं स्वीकार करता । इतनी सी स्वीकृति पाकर ही उसके अंग-अंग में आनंद का प्रवाह बह उठता है। इस वाक्यहीन प्राणिलोक में सिर्फ यही एक जीव अच्छा-बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका है, उस आनंद को देख सका है, जिसे प्राण दिया जा सकता है जिसमें अहैतुक प्रेम ढाल दिया जा सकता है, जिसकी चेतना असीम चैतन्य लोक में राह दिखा सकती है। जब मैं इस मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन देखता हूँ जिसमें वह अपनी दीनता बताता रहता है, तब मैं यह सोच ही नहीं पाता कि उसने अपने सहज बोध से मानव स्वरूप में कौन-सा मूल आविष्कार किया है। इसकी भावहीन दृष्टि की करुण व्याकुलता जो कुछ समझती है, उसे समझा नहीं पाती और मुझे इस सृष्टि में मनुष्य का सच्चा परिचय समझा देती है। इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य , मनुष्य के अंदर नहीं देख पाता।

मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ, तब मेरे सामने श्रीनिकेतन के तितल्ले पर की वह घटना प्रत्यक्ष-सी हो जाती है। वह आँख मूँदकर अपरिसीम आनंद, वह 'मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन' मूर्तिमान हो जाता है। उस दिन मेरे लिए वह एक छोटी-सी घटना थी, आज वह विश्व की अनेक महिमाशाली घटनाओं की श्रेणी में बैठ गई है। एक आश्चर्य की बात और इस प्रसंग में उल्लेख की जा सकती है। जब गुरुदेव का चिताभस्म कलकत्ते से आश्रम में लाया गया, उस समय भी न जाने किस सहज बोध के बल पर वह कुत्ता आश्रम के द्वार तक आया और चिता भस्म के साथ अन्यान्य आश्रमवासियों के साथ शांत गंभीर भाव से उत्तरायण तक गया। आचार्य क्षितिमोहन सेन सबके आगे थे। उन्होंने मुझे बताया कि वह चिता भस्म के कलश के पास थोड़ी देर चुपचाप बैठा भी रहा ।

कुछ और पहले की घटना याद आ रही है। उन दिनों मैं शांतिनिकेतन में नया ही आया था। गुरुदेव से अभी उतना धृष्ट नहीं हो पाया था। गुरुदेव उन दिनों सुबह अपने बगीचे में टहलने के लिए निकला करते थे। मैं एक दिन उनके साथ हो गया था। मेरे साथ एक और पुराने अध्यापक थे और सही बात तो यह है कि उन्होंने ही मुझे भी अपने साथ ले लिया था। गुरुदेव एक-एक फूल पत्ते को ध्यान से देखते हुए अपने बगीचे में टहल रहे थे और उक्त अध्यापक महाशय से बातें करते जा रहे थे। मैं चुपचाप सुनता जा रहा था। गुरुदेव ने बातचीत के सिलसिले में एक बार कहा "अच्छा साहब, आश्रम के कौए क्या हो गए ? उनकी आवाज सुनाई ही नहीं दी?" न तो मेरे साथी उन अध्यापक महाशय को यह खबर थी और

न मुझे ही। बाद में मैने लक्ष्य किया कि सचमुच कई दिनों से आश्रम में कौऐ नहीं दिख रहे हैं, मैने तब तक कौओं को सर्वव्यापक पक्षी ही समझ रखा था। अचानक उस दिन मालूम हुआ कि वे भले आदमी भी कभी-कभी प्रवास को चले जाते हैं या चले जाने को बाध्य होते हैं । एक लेखक ने कौओं की आधुनिक साहित्यिकों में उपमा की है, क्योंकि इनका मोटो है 'मिसचिफ् फार सेक' (शरारत के लिए ही शरारत)। तो क्या कौओं का प्रवास भी किसी शरारत के उद्देश्य से ही था? प्राय: एक सप्ताह के बाद बहुत कौए दिखाई दिए ।

दूसरी बार मैं सबेरे गुरुदेव के पास उपस्थित था। उस समय एक लंगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, "देखते हो यह यूथभ्रष्ट है। रोज फुदकती है, बस यहीं आकर मुझे इसकी चाल में एक करुण-भाव दिखाई देता है।" गुरुदेव ने अगर कह न दिया होता तो मुझे उसका करुण भाव एकदम नहीं दीखता। मेरा अनुमान था कि मैना करुण भाव दिखाने वाला पक्षी है ही नहीं। वह दूसरों पर अनुकंपा ही दिखाया करती है। तीन-चार वर्ष से मैं एक नये मकान में रहने लगा था। मकान के निर्माताओं ने दीवारों में चारों और एक-एक सुराख छोड़ रखी है। यह शायद आधुनिक वैज्ञानिक खतरे का समाधान होगा । सो, एक मैना दंपत्ति नियमित भाव से प्रतिवर्ष यहाँ गृहस्थी जमाया करते हैं, तिनके और चीथड़ों का अंबार लगा देते हैं भलेमानस गोबर के टुकड़े तक ले आना नहीं भूलते । हैरान होकर हम सूराखों में ईट भर देते हैं , परंतु वे खाली बची जगह का भी उपयोग कर लेते हैं । पति-पत्नी कहीं से कोई एक तिनका लेकर सूखा में रखते हैं तो उनके भाव देखने लायक होते हैं। पत्नी देवी का तो क्या कहना । एक तिनका ले आई तो फिर एक पैर पर खड़ी होकर जरा पंखों को फटकार दिया, चोंच को अपने ही परों से साफ़ कर लिया और इस प्रकार की मधुर और विजयोद्घोषी वाणी में गान शुरू कर दिया । हम लोगों की उन्हें कोई परवा ही नहीं रहती । अचानक इसी समय अगर पति देवता भी कागज़ का या गोबर का टुकड़ा लेकर उपस्थित हुए तब तो क्या कहना। दोनों के नाच-गान और आनंद नृत्य से सारा मकान मुखरित हो उठता है। इसके बाद ही पत्नी देवी जरा हम लोगों की ओर मुखाबित होकर लापरवाही भरी अदा से कुछ बोल देती हैं। पति देवता भी मानो मुस्कराकर हमारी और देखते, कुछ रिमार्क करते और मुँह फेर लेते हैं । पक्षियों की भाषा तो मैं नहीं जान पाता, पर मेरा निश्चय विश्वास है कि उनमें कुछ इस तरह की बातें हो जाया करती है:-

पत्नी - ये लोग यहाँ कैसे आ गए जी ?

पति - ऊँह बेचारे आ गए हैं, तो रह जाने दो । क्या कर लेंगे।

पत्नी - लेकिन फिर भी इनको इतना तो ख्याल होना चाहिए कि यह हमारा प्राइवेट घर है।

पति - आदमी जो हैं, इतनी अकल कहाँ ?

पत्नी - जाने भी दो ।

पति - और क्या ।

सो, इस प्रकार की मैना कभी करुण हो सकती है, यह मेरा विश्वास ही नहीं था। गुरुदेव की बात पर मैंने ध्यान से देखा तो मालूम हुआ कि सचमुच ही उसके मुख पर एक करुण भाव है। शायद यह विधुर पति था जो पिछली स्वयंवर सभा के युद्ध में आहत और परास्त हो गया था। या विधवा पत्नी है, जो पिछले बिड़ाल के आक्रमण के समय पति को खोकर युद्ध में ईषत् चोट खाकर एकांत विहार कर रही है। हाय,क्यों इसकी ऐसी दशा है! शायद इसी मैना को लक्ष्य करके गुरुदेव ने बाद में एक कविता लिखी थी, जिसके कुछ अंश का सार इस प्रकार है:

"उस मैना को क्या हो गया है, यही सोचता हूँ। क्यों वह दल से अलग होकर अकेली रहती है? पहले दिन देखा था संसार के पेड़ के नीचे मेरे बगीचे में । जान पड़ा जैसे एक पैर से लंगड़ा रही हो। इसके बाद उसे रोज सबेरे देखता हूँ - संगीहीन होकर कीड़ों का शिकार करती फिरती है। चढ़ जाती है बरामदे में । नाच-नाचकर चहलकदमी किया करती है, मुझसे ज़रा भी नहीं डरती। क्यों है ऐसी दशा इसकी ? समाज के किस दंड पर उसे निर्वासन मिला है, दल के किस अविचार पर उसने मान किया ।

कुछ ही दूरी पर और मैनाएँ बक-झक कर रही हैं, घास पर उछल-कूद रही हैं। उड़ती-फिरती हैं शिरीषवृक्ष की शाखाओं पर । इस बेचारी को ऐसा कुछ भी शौक नहीं है। इसके जीवन में कहाँ गाँठ पड़ी है, यही सोच रहा हूँ। "सबेरे की धूप में मानो सहज मन से आहार चुगती हुई झड़े हुए पत्तों पर कूदती फिरती है सारा दिन।" किसी के ऊपर इसका कुछ अभियोग है, यह बात बिल्कुल नहीं जान पड़ती। इसकी चाल में वैराग्य का गर्व भी तो नहीं है, दो आग सी जलती आँखे भी तो नहीं दिखती।" इत्यादि।

जब मैं इस कविता को पढ़ता हूँ तो उस मैना की करुण मूर्ति अत्यंत साफ होकर सामने आ जाती है। कैसे मैंने उसे देखकर भी नहीं देखा और किस प्रकार कवि की आँखें उस विचारी के मर्मस्थल तक पहुँच गई, सोचता हूँ तो हैरान हो रहता हूँ। एक दिन वह मैना उड़ गई। सायंकाल कवि ने उसे नहीं देखा। जब वह अकेले आया करती है उस डाल के कोने में, जब झींगुर अंधकार में झनकारता रहता है, जब हवा में बाँस के पत्ते झरझराते रहते हैं,पेड़ों की फाँक से पुकारा करता है नींद में उड़ने वाला संध्यातारा! कितना करुण है उसका गायब हो जाना!

## अभ्यास

### बोध प्रश्न

#### अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. लेखक सर्वव्यापक पक्षी किसे समझ रहा था?
2. दूसरी बार सबेरे गुरुदेव के पास कौन उपस्थित था?
3. लेखक के अनुसार मैना कैसा पक्षी है?
4. गुरुदेव कहाँ रहते थे?
5. गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़ कहीं और रहने का मन क्यों बनाया ?

#### लघु उत्तरीय प्रश्न :

**निम्नलिखित वाक्यों का आशय स्पष्ट कीजिए:-**

क. भावहीन दृष्टि की करुण व्याकुलता जो कुछ समझती है, उसे समझा नहीं पाती और मुझे इस सृष्टि में मनुष्य का सच्चा परिचय समझा देती है।

ख. "सबेरे की धूप में मानो सहज मन से आहार चुगती हुई झड़े हुए पत्तों पर कूदती फिरती है सारा दिन"

ग. मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते।

#### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

क. हजारीप्रसाद द्विवेदी के लेखन कला की विशेषताएँ लिखिए ।

ख. निबंध गद्य साहित्य की उत्कृष्ट विधा है, जिसमें लेखक अपने भावों और विचारों को कलात्मक और लालित्यपूर्ण शैली में अभिव्यक्त करता है। इस निबंध में उपर्युक्त विशेषताएँ कहाँ झलकती हैं ? किन्हीं चार विशेषताओं को लिखिए ।

ग. करुण मैना को देखकर गुरुदेव ने कविता लिखी, उसका सार अपने शब्दों में लिखिए।

## भाषा अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों में से रूढ़, योगरूढ़ और यौगिक शब्द अलग-अलग कीजिए :-**

विद्यानगर, त्रिवेणी, महादेवी, श्रीहीन, असामयिक, चरण, निर्मल, काव्य-सरोवर, दशानन, दशरथ-नंदन, प्रसाद, अनुराग, विवेकानंद, ब्रजनंदन, गुण, चहल-क़दमी ।

2. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

विभूतियाँ, अधिवेशन, अवसाद, आशुतोष, रसानुभूति, गंगाजल ।

3. **निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए -**

दुरभाग, आसुतोश, औजसवी, अनकुल, बिशाद, निशतेज, साहित्यक,

4. **निम्नलिखित वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए :**

क. हृदय को स्पर्श करने वाली दृष्टि

ख. साहित्य की रचना करने वाला

ग. जानने की इच्छा

घ. रस की अनुभूति करना

ड. जो पढ़ा लिखा न हो

च. जो सब जगह व्याप्त हो

**ध्यान से पढ़िए :**

1. रवीन्द्र क्रिकेट का मैच खेलते समय शून्य पर आउट हो गया। पवैलियन में लौटकर वह अपने कप्तान को दोष देने लगा। कप्तान ने हँसकर कहा वाह! यह तो उल्टा चोर कोतवाल को डाँटने वाली बात हुई।
2. लालाजी अपने बेटे को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण देखना चाहते थे। अपने बेटे के लिए तीन शिक्षकों को इसलिए उन्होंने घर पर पढ़ाने के लिए लगा रखा था, फिर भी वह तृतीय श्रेणी में ही उत्तीर्ण हो सका, लालाजी ने अपना माथा फोड़ लिया कहा - खोदा पहाड़ निकली चुहिया ।

उपर्युक्त गद्यांशों में रेखांकित वाक्यों को पढ़िए, इनको मुहावरा कहते हैं। मुहावरे और कहावतें सूत्र वाक्य हैं जिनका अर्थ लक्ष्यार्थ होता है।

पाठ में आए मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. **निम्नलिखित शब्दों के युग्म रूप लिखिए:-**

समय, अवस्था, शक्ति, दिन

**ध्यान से पढ़िए -**

'स्वावलंबन का जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। जीवन में केवल वही व्यक्ति सफल होते हैं, जो स्वावलम्बी होते हैं। स्वावलम्बी मनुष्य के सम्मुख संसार की सारी बाधाएँ सिर झुकाती हैं। इसी से व्यक्तियों में आत्म-गौरव व आत्म विश्वास की भावनाएँ जागती हैं।'

**इस अनुच्छेद के रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए-**

**स्वावलंबन, आत्म विश्वास, आत्म गौरव आदि शब्द वाक्यांश हैं।**

4. **पाठ में आए वाक्यांशों के अर्थ लिखिए।**
5. **नीचे पाठ के आधार पर कुछ शब्द युग्म दिए गए हैं**

   **जैसे - संभव-असम्भव, स्वस्थ-अस्वस्थ,**

   **इसी तरह पाठ से कुछ शब्द चुनिए एवं 'अ' या 'अन्' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए।**

**''विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम भाषा है।''** पशु-पक्षी की अपनी भाषा होती है। स्थान-स्थान पर भाषागत परिवर्तन होते रहते हैं, क्षेत्रीय भाषा बोली कहलाती है, बोली में व्याकरण का अनुशासन नहीं होता।

6. **भाषा और बोली में अंतर स्पष्ट कीजिए ।**
7. **मध्यप्रदेश की प्रमुख चार बोलियों के नाम लिखिए ।**

## योग्यता विस्तार

1. पशु पक्षियों के चित्रों का संग्रह कीजिए उसका एक एलबम बनाइए।
2. पशु-पक्षियों पर आधारित कविताएँ खोजकर अपनी कापी में लिखिए।
3. मध्यप्रदेश के वन्य अभ्यारण कहाँ-कहाँ हैं नाम पता कीजिए एवं एक सूची बनाकर शिक्षक को दिखाइए।
4. मध्यप्रदेश के चार निबंधकारों के नाम लिखकर उनके निबंधों की एक सूची बनाकर कक्षा में दिखाइए।

### शब्दार्थ

अन्यत्र = दूसरे स्थान पर, तिमंजिले = तीन मंजिला, क्षीणवपु = कमजोर, प्रगल्भ - चतुर, होशियार, अस्तगामी = डूबते हुए, मर्मस्थल - शरीर के कोमल अंग, जैसे हृदय

* * *